

# Inhalt

## I. Lyrik (aus dem handschriftlichen Nachlass)

|                          |    |
|--------------------------|----|
| Vorwort                  | 9  |
| Märznacht                | 10 |
| Frühlingsnahen           | 11 |
| Frühlingsboten           | 12 |
| Die erste Schwalbe       | 13 |
| Die Talglocke            | 14 |
| Des Liebsten Nachtlid    | 15 |
| Klangschrei              | 16 |
| Heimkehr                 | 17 |
| Die Heitere              | 18 |
| Heimweh                  | 19 |
| Ersehnter Frühling       | 20 |
| Schlaf und Traum         | 21 |
| Die Hoffnungslose        | 22 |
| Abschied                 | 23 |
| Morgenreise              | 24 |
| Die fremde Heimat        | 25 |
| Der Kirchhof             | 26 |
| Festabend                | 27 |
| Die Rose                 | 28 |
| Trübe Morgen, helle Tage | 29 |
| Schmerzenfrühling        | 30 |
| Der Redner               | 31 |
| Ahnung                   | 32 |
| Stern und Wolke          | 33 |

|                         |    |
|-------------------------|----|
| Wißbegierde             | 34 |
| Nachtgesang             | 35 |
| Waldesnacht             | 36 |
| Der besiegte Sieger     | 37 |
| Die Waldkapelle         | 38 |
| Klage des letzten Hünen | 39 |
| Fischerlied             | 41 |
| Welledas Lied           | 42 |
| Die Blüte               | 43 |
| Der Mondstrahl          | 44 |
| Beseelter Frühling      | 45 |
| An einem Frühlingsabend | 46 |
| Nachklänge              | 47 |
| Ermutigung              | 48 |
| Der einzige Freund      | 49 |
| Gebet (1870)            | 50 |
| An dich allein (1871)   | 51 |
| An Ignaz                | 52 |
| Gute Nacht              | 53 |
| Winterbild              | 54 |
| Die ewige Lampe         | 55 |
| Täuschung               | 57 |
| Waldblume               | 58 |
| Ueberdruß               | 59 |
| Gebet                   | 60 |
| Der Frauen Dank         | 62 |
| Mairegen                | 63 |

|                          |    |
|--------------------------|----|
| Abendstimmung            | 64 |
| Walddritt                | 64 |
| Frühlings Erwachen       | 65 |
| Der Brief                | 66 |
| Die Genesung             | 67 |
| Einladung                | 68 |
| Willkommen               | 69 |
| Am Waldrand              | 70 |
| Spröder Lenz             | 71 |
| Befreit                  | 72 |
| Ewig still               | 73 |
| Schmiedelied             | 74 |
| Ein dürrer Ast           | 75 |
| Schutz und Schirm        | 76 |
| In tiefer Nacht          | 77 |
| Die Lieb allein          | 78 |
| Buntes Laub              | 79 |
| Blüh weiter              | 80 |
| Gebrochene Fesseln       | 81 |
| Weckruf                  | 82 |
| Mondaufgang              | 83 |
| Die wilde Mutter         | 84 |
| Mairose                  | 85 |
| Schlummerlieder          | 86 |
| Aus den Winterliedern    | 87 |
| Aus den Frühlingsliedern | 88 |
| Aus den Sommerliedern    | 89 |
| Aus den Herbstliedern    | 90 |

|  |     |
|--|-----|
| Das Ende   | 91  |
| Auszug aus der Pantellaria   |     |
| Einleitung   | 92  |
| Aus den letzten Gesängen   | 93  |
| Der Trank des Lebens   | 95  |
| Zum zweihundertjährigen Jubiläum<br>des Gymnasiums Petrinum in Dorsten | 96  |
| II. Prosa  |     |
| Auszug aus der Novelle »An der Balkenfurth«                            | 99  |
| III. Biografisches   |     |
| Auszüge aus zwei Briefen an ihre Nichte Elise<br>Naegele               | 111 |
| Nachwort   | 113 |
| Benutzte Literatur   | 134 |
| Bibliografie Maria Lenzen  | 135 |
| Textnachweise  | 139 |
| Abbildungsverzeichnis  | 140 |